"घनानन्द की विरहानुभूति"

वेदना हृदय की मादक टीस है तथा विरह प्रेम की कसौटी है। प्रेम की तीव्रता विरह से ही मापी जाती है। संयोग काल में प्रिय के रूप दर्शन एवं सान्निध्य के कारण प्रेमी का हृदय वासनाभिभूत रहता है, किन्तु विरह में वासना का कलुष नष्ट हो जाता है और जो कुछ शेष बचता है, वह पूर्णतः उदात्त, सात्विक एवं निष्कलुष होता है। विरह से ही प्रेमियों की दृढ़ता, निष्ठा, अनन्यता एवं आतुरता का बोध होता है। इसीलिए विरह काव्य सर्वाधिक मार्मिक, चित्ताकर्षक एवं हृदयद्रावक माने गए हैं। घनानन्द विरही थे। उनकी प्रेमिका सुजान ने उनके साथ विश्वासघात किया था। इसीलिए उनका हृदय सुजान के प्रति उत्कट प्रेम एवं विरह से युक्त था। घनानन्द की विरह वेदना स्वानुभूत होने से अत्यधिक मार्मिक एवं प्रभावोत्पादक बन गई है। उसमें जो कुछ टीस, कसक एवं तड़प है वह सब आन्तरिक है, विरह की बाहरी ताप-जोख उसमें नहीं है। घनानन्द की विरह वेदना अकृत्रिम एवं स्वानुभूत है तथा उसमें हृदय पक्ष की प्रधानता है।

घनानन्द के हृदय में प्रिय का रूप इस तरह बसा हुआ है कि एक पल भी वह रूप आँखों से ओझल नहीं होता। घनानन्द के उत्कट विरह का मूल कारण यही रूपासक्ति है। प्रिय के रूप की विभिन्न छटाएँ उनकी कल्पना में घूमती रहती है। वह रूप उनके हृदय में ऐसा बस गया है कि उसे निरन्तर देखने की प्रबल

इच्छा मन में बनी रहती है। आँखों की कुछ ऐसी आदत बन गई है कि वे उस रूप को देखकर ही तृप्त होती हैं। अपनी इस रूपासक्ति का वर्णन करते हुए घनानन्द सुजान को सम्बोधित करते हुए कहते हैं —

"रावरे रूप की रीति अनूप, नयो-नयो लागत ज्यों-ज्यों निहारिए।
त्यों इन आँखिन बानि अनोखी अघानि कहूँ नहिं आनि तिहारिए॥

घनानन्द के विरह में न तो बाहरी उद्दाम वेग है और न ही कृत्रिमता। उसमें स्वानुभूत वेदना का सरल, स्वच्छन्द एवं अकृत्रिम चित्रण किया गया है। जहाँ हार्दिक अनुभूतियों का चित्रण होता है वहाँ आडम्बर और प्रदर्शन के लिए कोई स्थान नहीं होता। विरही दशा बड़ी विचित्र होती है। उसे एकसाथ अनेक विरोधाभासों में जीना पड़ता है। उसका हृदय तो उद्वेग की आग में जलता है, किन्तु आँखों से अश्रुवर्षा होती रहती है। इस प्रकार वह जलता भी है और भीगता भी है —

"अन्तर उदेग दाह आँखिनु प्रवाह आँसू,
देखी अटपटी चाह भीजनि दहनि है।
सोइबो न जागिबो हू, हँसिबो न रोइबो हू
खोय-खोय आपही मे चेटक लहनि है॥"

घनानन्द का प्रेम विषम प्रेम है। वे सुजान के प्रति जितने उत्कट प्रेम से भरे हुए हैं, उतनी ही निष्ठुरता एवं निर्ममता वह दिखाती है। प्रिय की यह निर्दयता, निष्ठुरता घनानन्द को अपने मार्ग से डिगा नहीं पाती। वे उपालम्भ देते हुए कहते हैं कि तुमने तो पहले मीठे-मीठे बोल सुनाकर मुझे अपने प्रेमजाल में फाँस लिया और

अब इस प्रकार से हृदय को जला रही हो, यह कहाँ का न्याय है ? कहीं ऐसा न हो कि तुम्हें भी मेरी तरह जीवन में बेचैन होना पड़े —

"मीठे-मीठे बोल बोलि ठगी पहले तो तब,
अब जिय जात कहौ क्यौं कौन न्याय है।
सुनी हैं कि नाहीं यह प्रगट कहावति जू,
काहू कलपाय है सु कैसे कल पाय है॥"

घनानन्द अन्य रीतिकालीन कवियों की भाँति शास्त्रीय पद्धति पर विरह निरूपण नहीं करते हैं। अपितु मन में उठने वाले भावों का यथातथ्य चित्रण करते हैं। उनका हृदय व्याकुलता की अग्नि में जलता रहता है, अंग-प्रत्यंग विरह विकल होकर उबलते से रहते हैं, प्राण निरन्तर विरह-वेदना में तप्त होते हैं और इस कारण वे धैर्य धारण नहीं कर पाते। घनानन्द एकनिष्ठ अनन्य प्रेमी थे। उभयपक्षीय प्रेम में संयोग सुख के भाव चित्र देखे जाते हैं, किन्तु एकपक्षीय, एकांगी प्रेम में हृदय की तड़प, चीत्कार एवं प्रिय की निष्ठुरता का निरूपण होता है, जिससे वह मार्मिक एवं हृदय-द्रावक बन जाता है। घनानन्द का सुजान के प्रति प्रेम भी इसी प्रकार का है, इसीलिए वह विषम प्रेम है। घनानन्द निर्द्वन्द्व भाव से अपने प्रिय के प्रति प्रेम किए जाते हैं —

"चाहौ अनचाहौ जान प्यारे पै अनंद घन,
प्रीति रीति विषम सु रोम-रोम रमी है।"

घनानन्द की विरह वेदना प्रकृति के उद्दीपन से और भी बढ़ गई है। प्रकृति उनके विरह

को उद्दीप्त कर रही है। कोयल कूक-कूक करके जाने किस जन्म का बैर निकाल रही है, मोर और चातक भी कान फोड़ रहे हैं, पुरवैया हवा अंगों को जला रही है —

"कारी दूर कोकिला कहूँ को बैर काढ़ति री,
कूकि-कूकि अब ही करेजो किन कोरि लें।
पैंड़े परे पापी ये कलापी निस द्यौस ज्यों ही,
चातक घातक त्यौं ही तुहूँ कान फोरि लें॥"

विरही प्रायः प्रिय के पास अपनी विरह-वेदना का संदेश प्रेषित करने के लिए किसी न किसी की खोज में रहते हैं। घनानन्द ने 'बादल' को अपना संदेश वाहक बनाकर यह अनुरोध किया है

"घन आनन्द जीवन दायक हौ, कछु मेरिऔ पीर हियें परसौ।
कबहूँ वा बिसासी सुजान के आँगन मो अँसुवानि हू लै बरसौ॥"

वस्तुतः कहा जा सकता है कि निस्सन्देह घनानन्द के विरह वर्णन में एक पावनता है तथा उसमें हृदय पक्ष की प्रधानता है। अपनी सात्विकता, उदात्तता, सरलता एवं आध्यात्मिकता के कारण घनानन्द का विरह वर्णन हिन्दी में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।